दैनिक
पुष्पांजली टुडे
नई सोच, नई पहल

ग्वालियर वर्ष: 03 अंक: 100 | ग्वालियर, शनिवार, 11 अप्रैल 2020 | पृष्ठ: 08 - मूल्य 2 रुपए

कोरोना: सड़क पर गिरे पैसे देख पहले रख लेते थे जेब में
अब बुला लेते हैं पुलिस को

नौगढ़। क्या आपने भी सुना है कि सड़क पर पैस गिरा हो और लोग यह देख कर पुलिस बुला लें। जी हां, उत्तर प्रदेश के नौसढ़ में कुछ ऐसा ही हुआ। यहां लोगों को सड़क पर दो-दो हजार के नोट गिरे थे। कोरोना के डर से कोई भी इन्हें छुने को तैयार नहीं हुआ। ग्रामीणों ने पुलिस को सूचना दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने इन नोटो देखा तो पता चला कि ये नकली नोट है। इसके बाद भी कोई इसे छूने को तैयार नहीं हुआ। बाद में पुलिस ने इन नकली नोट को जलाकर नष्ट कर दिया।

बता दें कि इन दिनों लोगों में कोरोना को लेकर दहशत है। शहरी ही नहीं ग्रामीण इलाकों में भी लोग बहुत अलर्ट है। गांव में तो यह भी अफवाह फैली है कि कोई कोरोना वायरस लगा कपड़ा भी फेंक जा रहा है। हालांकि पुलिस लोगों से इस तरह के अफवाह पर ध्यान नहीं देने को कहती रहती है। कोरोना के संक्रमण से बचाव का हरसंभव प्रयास किया जा रहा है। वहीं सड़क पर गिरे नोट को भी उठाने से कतराने लगे हैं। नौगढ़-मद्धूपुर मार्ग पर रिठिया डुमरियां गांव के समीप बुधवार की रात सड़क पर दो हजार का नोट लावारिश हाल पर देख लोगों में खलबली मच गई। सड़क से गुजर रहे राहगीरों की नजर नोटों पर पड़ी, तो शोर मचाया। देखते ही देखते आसपास के लोगों की भीड़ जमा हो गई। सड़क पर गिरे दो हजार के आठ नोट उठाने की कोई जहमत नहीं उठाया। लोगों ने पुलिस को सूचना दी।

70 फीसदी भारतीय लॉकडाउन बढ़ाने के पक्ष में ज्यादा से ज्यादा 15 मई तक करने की मांग

नई दिल्ली। लॉकडाउन खत्म होने में पांच दिनों का सयम बाकी है, लेकिन देश के 79 फीसदी लोगों का मानना है कि कोरोना संकट को देखते हुए इसे आगे बढ़ाया जाए। ऑनलाइन सर्वेक्षण कंपनी के लोकल सर्किल ने हिंदुस्तान को बताया है कि देश में लोग इसे कम से कम 30 अप्रैल तक और ज्यादा से ज्यादा 15 मई तक बढ़ाने की मांग कर रहे हैं। देश के 280 जिलों से 26,000 लोगों से इस बारे में उनकी राय ली गई। 29 फीसदी का मानना है कि अखिल भारतीय स्तर पर लॉकडाउन को 30 अप्रैल तक बढ़ाया जाना चाहिए। वहीं छह फीसदी लोगों का कहना है कि लॉकडाउन को 15 मई तक बढ़ाया जाना चाहिए। सर्वेक्षण में 14 फीसदी लोगों का कहना था कि जिन जिलों में कोरोना महामारी के मामले नहीं हैं, उन्हें खोल देना चाहिए। 28 फीसदी लोगों का कहना है कि 31 मार्च के बाद जिन जिलों में कोविड-19 के मामले नहीं सामने आए हैं या कोई सक्रिय केस नहीं दिखे हों सिर्फ वहीं लॉकडाउन खुले बाकी जगहों पर जारी रहे। 11 फीसदी लोगों का मानना है कि उन सभी जिलों को खोल देना चाहिए जहां 20 से कम मामले देखने को मिले हों। सर्वेक्षण में चार फीसदी लोग चाहते हैं कि जिन जिलों में 50 से कम मामले हुए हों उन्हें 15 अप्रैल से खोल देना चाहिए।

इंदौर को कोरोना के कहर से बचाने के लिए शिवराज ने की स्पेशल 13 की तैनाती

नई दिल्ली। कोरोना वायरस (कोविड-19) का हॉटस्पॉट बने इंदौर शहर में संक्रमण को रोकने के लिए राज्य के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने यहां 13 अतिरिक्त अधिकारियों को तैनात किया है, जिनमें दो आईएएस अधिकारी भी शामिल हैं। शिवराज ने शुक्रवार (10 अप्रैल) को एक ट्वीट के माध्यम से इसकी जानकारी दी। मध्यप्रदेश के इंदौर जिले में बीते

15 दिनों में कोविड-19 संक्रमण से 2 चिकित्सकों समेत 27 रोगियों की मौत दर्ज की गई है, जिनमें से 4 मौतें आज हुई हैं। आंकड़ों के विश्लेषण से पता चलता है कि शहर में कोविड-19 के मरीजों की मृत्यु दर राष्ट्रीय स्तर से कहीं ज्यादा बनी हुई है। इंदौर में कोरोना वायरस के मरीज मिलने के बाद से प्रशासन ने 25 मार्च से शहरी सीमा में कर्फ्यू लगा रखा है।

जीरो से 10 टेस्ट लैब या हॉटस्पॉट सील, सीएम योगी की टीम 11 यूपी में ऐसे रोक रही कोरोना

शिवराज सिंह चौहान ने ट्वीट किया, मेरे प्रिय इंदौर निवासियों-कोरोना वाइरस से लड़ रहे आप सभी नागरिकों और स्थानीय प्रशासन की मदद के लिए मैंने इन्दौर में 13 अतिरिक्त अफसरों को जिनमें 2 आईएएस अधिकारी भी शामिल है, को तत्काल प्रभाव से पदस्थ किया है। आप के साथ पूरा मध्यप्रदेश है और हम मिल कर इस महामारी से जीतेंगे। जिला मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. प्रवीण जड़िया ने बताया कि शुक्रवार को कोरोना संक्रमण के चलते एक 65 वर्षीय चिकित्सक की मौत की हो गई है। वे शासकीय सेवा के बाद यहां निजी प्रैक्टिस करते थे। दो दिन पहले ही उनमें संक्रमण की पुष्टि हुई थी। आज उपचार के दौरान उन्होंने दम तोड़ दिया। इस प्रकार अब तक जिले में बीते 25 मार्च से 10 अप्रैल के मध्य 27 संक्रमितों की मौत दर्ज की गई है। जिनमें दो चिकित्सक भी शामिल हैं। डॉ. जड़िया ने बताया इससे पहले यहां कोविड-19 से जिले की पहली मौत 25 मार्च को एक 65 वर्षीय पुरुष की दर्ज की गई थी। जिसके बाद 30 मार्च को तीन मौतें एक 41 वर्षीय पुरुष, एक 80 वर्षीय तथा 49 वर्षीय महिला की दर्ज की गई थी। इसी क्रम में बीती 1 अप्रैल को 56 वर्षीय पुरुष की मौत, 2 अप्रैल को 54 वर्षीय पुरुष और 65 वर्षीय महिला की मौत शामिल है। बाद में 3 अप्रैल को एक 54 वर्षीय पुरुष और 30 वर्षीय युवक की मौत हो गई है। जिसके अगले दिन 4 अप्रैल को एक 42 वर्षीय पुरुष और 60 वर्षीय महिला की मौत दर्ज की गई है। डॉ जड़िया के अनुसार 5 अप्रैल को तीन महिला तथा एक वृद्ध की मौत हो दर्ज की गई है, जबकि 6 अप्रैल को 2 पुरुषों की मौत हुई है। 7 अप्रैल को 5 मौत दर्ज की गई हैं जिनमें 47, 49, 57, 59 और 63 वर्षीय पुरुष हैं। इसी क्रम में बीती 9 अप्रैल को एक 62 वर्षीय चिकित्सक और 44 वर्षीय पुरुष की मौत हुई है, जबकि 10 अप्रैल को एक 65 वर्षीय चिकित्सक की कोरोना संक्रमण के चलते मौत की पुष्टि हुई है। सीएमएचओ ने बताया आज 10 अप्रैल को दूसरे चरण में पाए गए 10 से अधिक संक्रमितों को पूर्णता स्वस्थ पाए जाने पर अस्पतालों से छुट्टी दी गई है। आधिकारिक जानकारी के अनुसार जिले में वर्तमान में 4 हजार से ज्यादा संदेहियों को एहतियातन घरों तथा अन्य स्वास्थ केंद्रों में चिकित्सकीय निगरानी में रखा गया है, जबकि अभी भी 200 से ज्यादा संक्रमितों का यहां उपचार जारी है।

पंजाब में बढ़ सकती है
लॉकडाउन की अवधि, सीएम अमरिंदर ने दिए संकेत

चंडीगढ़। पंजाब में लॉकडाउन और कर्फ्यू की अवधि बढ़ सकती है। प्रदेश के मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह ने शुक्रवार (10 अप्रैल) को यह संकेत दिया। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि राज्य में कोरोना वायरस के प्रसार को रोकने के लिए मास्क पहनना अब अनिवार्य है। उन्होंने कहा, ÷इसके लिए आपको साफ कपड़े का एक टुकड़ा चाहिए।÷ मुख्यमंत्री ने ट्वीट कर जानकारी दी, ÷पंजाब में मास्क पहनना अब अनिवार्य है। उन्होंने कहा, ÷स्वास्थ्य सचिव लोगों के लिए विस्तृत सलाह जारी कर रहे हैं। किसी जरूरी काम के लिए घर से बाहर निकलते समय मास्क पहनना याद रखें। आप सबको साफ कपड़े के एक टुकड़े की जरूरत है। चलिए हम सभी सुरक्षित रहे और कोविड-19 के खिलाफ एकजुट होकर लड़ें।÷ पंजाब में शुक्रवार (10 अप्रैल) सुबह कोरोना का एक नया मामला सामने आने के साथ राज्य में संक्रमण के कुल मामलों की संख्या 131 हो गई है। इस बीमारी से राज्य में अब तक 11 लोगों की मौत हो चुकी है।

पंजाब के मुख्यमंत्री अमरिंदर सिंह के प्रेस ब्रीफिंग की खास बातें

-जैसा कि आप जानते हैं, केरल के बाद लॉकडाउन करने वाला दूसरा राज्य पंजाब था। हमें कर्फ्यू के जरिए इसे कठोर बनाना था और भोजन, दूध, सब्जियाँ, राशन आदि हर चीज की व्यवस्था भी करनी थ। चीजों को सुव्यवस्थित करने में समय लगता है, लेकिन आज हमारे पास हर मोहल्ले में सब्जियों की ट्रालीयों के साथ जाने वाली टीम है, हर किसी को दूध उपलब्ध करवाया जा रहा है और राशन के लिए, लोग या तो किराने की दुकान पर जा सकते हैं या ऑर्डर कर सकते हैं।

-काफी लम्बा समय होने के कारण लोग तंग हो चुके हैं, लेकिन यह हमारे लिए आवश्यक था। कोरोना द्वारा पूरी दुनिया को चपेट में लेने और लॉकडाउन होने से पहले, 95,000 पंजाबी लोग- एनआरआई और पर्यटक वापस आए, इसके अलावा 44,000 लोग दिल्ली से आए।

-सभी को हवाई अड्डों पर चेक किया गया, लेकिन कभी-कभी लक्षण बहुत बाद तक दिखाई नहीं देते। हमें उन लोगों की लिस्ट मिली, उन्हें क्वारंटाइन में रखा, टीमों ने उनके घरों का दौरा किया और 7-10 दिनों के बाद जाँच की कि क्या उनके लक्षण हैं? उन लोगों में से अधिकांश अब क्वारंटाइन से बाहर हैं, जिनके कोई लक्षण नहीं नजर आ रहे थे। दूसरा, ये नए मामले थे जो निज़ामुद्दीन से आए थे, ये 651 लोग थे। हमने 636 का पता लगाया, 15 अभी भी नहीं मिले हैं और हम उनकी तलाश कर रहे हैं

-वर्तमान में पंजाब में 481 सैंपल लिए गए हैं, जिसमें से 27 पॉजिटिव पाए गए हैं। ये प्राथमिक स्त्रोत हैं और पंजाब में प्राथमिक स्त्रोत बढ़ रहा है। दोआबा क्षेत्र सबसे अधिक प्रभावित है, इसमें हमें समय लगा है, लेकिन फिलहाल, चीजें नियंत्रण में हैं।

-जहां तक टेस्ट की बात है, आज तक के आंकड़ों के अनुसार राज्य में 132 पुष्ट मामले हैं, जिनमें से 11 लोगों की मौत हो चुकी है। हमने अब तक 2877 सैंपल एकत्र किए हैं। शुरू में केवल 3 टेस्ट सेंटर थे- मेडिकल कॉलेज अमृतसर, पटियाला और चंडीगढ़ पीजीआई। हमने इसे सरकार के सामने रखा और उन्होंने फरीदकोट मेडिकल कॉलेज और लुधियाना में 2 निजी कॉलेजों में टेस्ट की अनुमति दी है, इसलिए अब परीक्षण में सुधार होगा। इसके अलावा जो नई टेस्ट किट आ रही हैं, हमें उम्मीद है कि सोमवार या मंगलवार तक वो हमारे पास होगी और फिर हम ज्यादा टेस्ट कर सकते हैं। पॉजिटिव टेस्ट वालों को कोरोना टेस्ट से गुजरना होगा।

सोशल मीडिया पर वायरल हुआ मशहूर न्यूज एंकर का फेक वीडियो
दर्ज कराया केस, जानें क्या है पूरा मामला

नोएडा। राष्ट्रीय न्यूज चैनल की एक वरिष्ठ एंकर रुबिका लियाकत ने अज्ञात लोगों के खिलाफ उनकी छवि धूमिल करने और जान से मारने की धमकी देने का केस दर्ज कराया है। आरोप है कि सोशल मीडिया पर कुछ यूजर्स ने एंकर का फर्जी वीडियो और ऑडियो बनाकर ट्विटर, फेसबुक, टिकटॉक और इंस्टाग्राम सहित अन्य प्लेटफॉर्म पर वायरल कर दिया। साइबर थाना पुलिस ने केस दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है। पुलिस को दी शिकायत में रुबिका ने बताया कि वो एक राष्ट्रीय न्यूज चैनल में वरिष्ठ एंकर है। एंकर ने 2018 में दिवाली के मौके पर एक वीडियो अपने ट्विटर अकाउंट पर पोस्ट किया था। आरोप है कि कुछ यूजर्स इस वीडियो में शामिल असली गाने की जगह आपत्तिजनक गाना लगा दिया और इसको सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया। इसके बाद ऑडियो और वीडियो ट्विटर, फेसबुक और इंस्टाग्राम पर वायरल कर दिया। जब एंकर ने आपत्तिजनक वीडियो को अपने ट्विटर पर पोस्ट करके ऐसा करने वालों के खिलाफ कार्रवाई करने की बात कही तो कुछ आरोपियों ने उन्हें जान से मारने की धमकी दी। साथ ही उनके साथ गाली-गलौच भी किया।

नेपाल के रास्ते भारत में कोरोना वायरस फैलाने की साजिश डीएम ने कहा- 40-50 लोग सीमा में घुसे

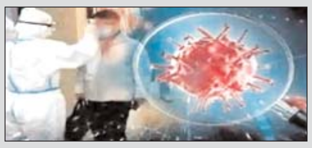

पटना। एक तरफ जहां देशभर में सभी लोग कोरोना वायरस के संक्रमण को रोकने में लगे हैं तो वहीं कुछ लोग इसे फैलाना भी चाहते हैं। बिहार के पश्चिम चंपारण के डीएम ने एसपी को पत्र लिखकर अलर्ट किया है कि नेपाल के पारसा जिले के सेरवा थाने के जानकी टोला पोस्ट ऑफिस के तहत जगनाथपुर गांव का रहने वाला जालिम मुखिया भारत में कोरोना महामारी फैलाने की योजना बना रहा है। डीएम ने अपने पत्र में आगाह करते हुए लिखा है कि 40 से 50 समुदाय विशेष के भारतीय नागरिकों के भारत आने की सूचना है। अनुरोध है कि भारत-नेपाल सीमा पर सतर्कता बरती जाए तथा किसी प्रकार की संदिग्ध गतिविधि पर कड़ाई से निगरानी की जाए। इस मामले पर बिहार के अपर मुख्य सचिव आमिर सुबहानी का बयान आया है। उन्होंने कहा, एसएसबी ने यह नहीं कहा है कि नेपाल से लोग घुसपैठ करके आए गए हैं। एसएसबी ने इसको लेकर आशंका जताई है। हमने पुलिस को अलर्ट कर दिया है और इस संबंध में केंद्रीय गृह मंत्रालय को जानकारी दे दी गई है। सुबहानी ने कहा कि किसी को भी हमारी सीमा से प्रवेश नहीं करने दिया जाएगा।

चिंताजनक खुलासा: 6 प्रतिशत रोगियों में ही दिखते हैं कोरोना लक्षण
94 फीसदी मामलों की अभी भी पहचान नहीं

नई दिल्ली। दुनियाभर में कोरोना रोगियों की संख्या 15 लाख पार हो चुकी है। लेकिन नए अध्ययन इशारा कर रहे हैं कि अब तक केवल छह फीसदी रोगियों की ही पहचान हुई है और 94 फीसदी मरीज चिकित्सा तंत्र से दूर हैं। भारत के संदर्भ में शोध के नतीजे और भी चिंताजनक हैं। क्योंकि देश में अब तक महज 1.68 फीसदी मरीजों की ही पहचान होने की बात इसमें कही गई है। यह अध्ययन जर्मनी के गोइत्तेजेन विवि डवलपमेंट इकोनोमिक्स विभाग ने किया। इसे लांसेट इंफेक्सियस डिजीज ने प्रकाशित किया है। इसमें कोरोना से प्रभावित 40 देशों में मरीजों के आंकड़ों के आधार पर 31 मार्च तक की स्थिति के अनुसार दुनिया के संभावित मरीजों का आकलन किया है। अध्ययन बताता है कि एकमात्र देश दक्षिण कोरिया है जो 49.47 फीसदी मरीजों की पहचान करने में सफल रहा है। इसी कारण वह बीमारी को काबू करने में कामयाब रहा। शोध के अनुसार, 31 मार्च तक भारत में कुल रोगियों की संख्या 1397 थी। जबकि इस अवधि तक देश में अनुमानित रोगियों की संख्या 83250 पहुंच चुकी थी, लेकिन जांच सीमित होने से महज 1.68 फीसदी मरीजों की ही पहचान हो सकी। जबकि इस अवधि में दक्षिण कोरिया सर्वाधिक 49.47

फीसदी मरीजों की पहचान करने में सफल रहा है। अध्ययन दावा करता है कि 31 मार्च तक दुनिया में संक्रमितों की संख्या करोड़ों में पहुंच चुकी थी। जबकि जॉन हॉपकिन्स यूनिवर्सिटी के अनुसार, वास्तविक मरीज दस लाख थे। दक्षिण कोरिया के बाद मरीजों की बेहतर पहचान नार्वे में 37.76 फीसदी तथा जर्मनी में 15.58 फीसदी हुई। इसके चलते इन देशों में मृत्यु दर कम रही है। इसके विपरीत इटली में मृत्यु दर बेहद ऊंची है लेकिन वहां 3.5 फीसदी मरीजों का ही सरकार पता लगा पाई। जबकि स्पेन में 1.7, अमेरिका में 1.6, फ्रांस में 2.62, ईरान में 2.40 तथा ब्रिटेन में 1.2 फीसदी मरीजों की ही जांच हो पाई। अध्ययन में दावा किया गया है कि यदि इन देशों में समय रहते मरीजों की पहचान हो पाती तो मृत्यु दर कम रहती। भारत में पहले संक्रमित देशों से आए लोगों और उनके संपर्क में आए लोगों की ही जांच हो रही थी। वहीं रैपिड टेस्ट के जरिए संक्रमित क्षेत्र में इनफ्लुएंजा जैसे लक्षणों वाले सभी मरीजों का टेस्ट होगा। वहीं, शोध टीम के प्रमुख प्रोफेसर सबेस्टिन वोल्मर ने कहा कि बीमारी के फैलाव को रोकने के लिए लॉकडाउन के प्रयास कारगर होंगे लेकिन उन्हें संक्रमित हो चुके मरीजों की पहचान भी सुनिश्चित करनी होगी।

कोरोना मरीजों की संख्या बढ़कर 6412, अब तक 199 लोगों की हुई मौत

नई दिल्ली। कोरोना वायरस से दुनिया के तकरीबन सभी देश प्रभावित हैं। पिछले साल के अंत से लगातार सामने आ रहे कोरोना वायरस के मामलों से दुनिया की बड़ी आबादी घरों के भीतर कैद है। कई देशों में लॉकडाउन लागू है। अब तक दुनिया में तकरीबन 16 लाख कोरोना वायरस के मामले सामने आ चुके हैं और 95 हजार से अधिक लोगों की जान गई है। भारत में कोरोना वायरस के 6412 मरीज मिल चुके हैं और 199 लोगों की जान गई है।

- गुजरात में कोरोना वायरस के 21 नए मामले मिले।
- पिछले 12 घंटे में कोरोना से रिकॉर्ड 30 मौतें हुई हैं। वहीं, 547 नए मरीज सामने आए हैं। कुल मरीजों की संख्या बढ़कर 6412 हो गई हैं। वहीं, अब तक 199 लोगों की मौत हुई है।
- राज्यों की स्थिति पर नजर डालें तो महाराष्ट्र में संक्रमण के सर्वाधिक मामले हैं। राज्य मंत्रिमंडल ने विधायकों और विधान परिषद सदस्यों के वेतन में अगले साल मार्च तक 30 प्रतिशत की कटौती करने का फैसला किया है।

सड़क पर गिरे थे
दो-दो हजार के कई नोट, लोगों ने बुला ली पुलिस और फिर...

नौगढ़। क्या आपने भी सुना है कि सड़क पर पैस गिरा हो और लोग यह देख कर पुलिस बुला लें। जी हां, उत्तर प्रदेश के नौसढ़ में कुछ ऐसा ही हुआ। यहां लोगों को सड़क पर दो-दो हजार के नोट गिरे थे। कोरोना के डर से कोई भी इन्हें छुने को तैयार नहीं हुआ। ग्रामीणों ने पुलिस को सूचना दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने इन नोटो देखा तो पता चला कि ये नकली नोट है। इसके बाद भी कोई इसे छूने को तैयार नहीं हुआ। बाद में पुलिस ने इन नकली नोट को जलाकर नष्ट कर दिया।
बता दें कि इन दिनों लोगों में कोरोना को लेकर दहशत है। शहरी ही नहीं ग्रामीण इलाकों में भी लोग बहुत अलर्ट है। गांव में तो यह भी अफवाह फैली है कि कोई कोरोना वायरस लगा कपड़ा भी फेंक जा रहा है। हालांकि पुलिस लोगों से इस तरह के अफवाह पर ध्यान नहीं देने को कहती रहती है। कोरोना के संक्रमण से बचाव का हरसंभव प्रयास किया जा रहा है। वहीं सड़क

पर गिरे नोट को भी उठाने से कतराने लगे हैं। नौगढ़-मद्धूपुर मार्ग पर रिठिया डुमरियां गांव के समीप बुधवार की रात सड़क पर दो हजार का नोट लावारिश हाल पर देख लोगों में खलबली मच गई। सड़क से गुजर रहे राहगीरों की नजर नोटों पर पड़ी, तो शोर मचाया। देखते ही देखते आसपास के लोगों की भीड़ जमा हो गई। सड़क पर गिरे दो हजार के आठ नोट उठाने की कोई जहमत नहीं उठाया। लोगों ने पुलिस को सूचना दी।

अमेरिका में कोरोना वायरस का तांडव जारी
एक दिन में 1783 लोगों की मौत

वॉशिंगटन। अमेरिका में कोरोना वायरस का तांडव पिछले कुछ दिनों से लगातार जारी है। रोजाना एक से दो हजार लोगों की मौत हो रही है। दुनिया में सबसे ज्यादा कोरोना के मरीज अमेरिका में ही मिले हैं। इसी बीच ताजा आंकड़ों के अनुसार, अमेरिका में पिछले 24 घंटों में 1783 लोगों की जान गई है। इससे पहले अमेरिका में लगातार दूसरे दिन करीब 2 हजार लोगों की मौत हुई थी।

जॉन्स हॉपकिन्स यूनिवर्सिटी के आंकड़े के अनुसार, अमेरिका में अब तक 4,62,135 लोग कोरोना से संक्रमित पाए जा चुके हैं। अब तक 16,513 लोगों की संक्रमण के चलते मौत हो चुकी है। वहीं, पूरी दुनिया की बात करें तो

तकरीबन 16 लाख लोग कोरोना संक्रमित हैं। वहीं, 95,699 लोगों की दुनियाभर में मौत हुई है। इटली में 18279, स्पेन में 15,447 लोगों की जान गई है। वहीं, न्यूयॉर्क में संक्रमण एशिया से आए यात्री नहीं बल्कि संभवत-यूरोप से आए यात्री लेकर आए। एक अमेरिकी अखबार की रिपोर्ट में कहा गया कि न्यूयॉर्क में, कोविड-19 का पहला मामला एक मार्च को सामने आया था, लेकिन यह राज्य में फरवरी मध्य से ही फैलना शुरू हो गया था। इस अध्ययन के सह शोधकर्ता माउंट सिनाई में इचान स्कूल ऑफ मेडिसिन में जिनेटिक विशेषज्ञ हर्म वान बकेल ने कहा, बहुसंख्यक लोग साफ तौर से यूरोप से आए यात्री हैं।

अमेरिका में दस दवाओं का परीक्षण चल रहा

ट्रंप अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का कहना है कि उनके देश में फिलहाल कोरोना वायरस की 10 दवाओं का क्लीनिकल परीक्षण चल रहा है। यह परीक्षण तेजी से फैल रहे कोरोना वायरस के चिकित्सकीय समाधान तलाश करने के प्रशासन के अभूतपूर्व प्रयासों के तहत किया जा रहा है। ट्रंप ने कहा, अमेरिकी उद्योग और अमेरिकी डॉक्टर एवं वैज्ञानिक मदद के लिए आगे आए हैं। 10 दवाओ का क्लीनिकल परीक्षण चल रहा है और मेरा प्रशासन बिना किसी देरी के इलाज उपलब्ध कराने के लिए अप्रत्याशित कदम उठा रहा है।

शोएब अख्तर के भारत-पाक मैच के आइडिया को राजीव शुक्ला ने बताया मजाक

नई दिल्ली। पाकिस्तान के पूर्व क्रिकेटर शोएब अख्तर ने हाल ही में कहा था कि कोरोना महामारी से लड़ने के लिए फंड एकत्रित करने के मकसद से भारत और पाकिस्तान की एक सीरीज कराई जानी चाहिए। शोएब अख्तर के इस बयान पर भारत के पूर्व क्रिकेटर कपिल देव और मदन लाल ने अपनी प्रतिक्रिया दी थी। इन दोनों ही दिग्गजों ने अख्तर के इस बयान को सिरे से खारिज कर दिया था। अब आईपीएल के पूर्व चेयरमैन राजीव शुक्ला ने शोएब अख्तर के इस बयान को कॉमिकल (मजाकिया) बताया है।

संपादकीय

जमाखोरी के खिलाफ

पंजीकृत लोगों को जरूरत भर का राशन न मिल पाने की शिकायतें आम हैं। ऐसे में गृह मंत्रालय को एक बार फिर सख्त निर्देश जारी करना पड़ा है कि कालाबाजारी और जमाखोरी पर रोक लगनी चाहिए। इसके लिए अधिकारियों को राज्य सरकारों से तालमेल करके जमाखोरों और कालाबजारी करने वालों के खिलाफ सख्त कदम उठाने का आदेश दिया गया है। देखना है, इसका कितना असर पड़ता है। बंदी के इस आलम में जब तमाम कारोबारी गतिविधियां रुकी हुई हैं, लोग घरों में बंद हैं, तब सब तक जरूरी खाद्य सामग्री पहुंचाना सरकारों के सामने बड़ी चुनौती है। हालांकि सार्वजनिक वितरण प्रणाली और मुहल्लों में राशन की दुकानें खोलने का आदेश है। आनलाइन बिक्री को भी छूट दी गई है। सरकारें कह चुकी हैं कि कोई भी दुकानदार वास्तविक कीमत से अधिक नहीं वसूलेगा, पर हकीकत यही है कि फल, सब्जियां, कई जरूरी खाद्य सामग्री मनमानी कीमतों पर बेची जा रही हैं। ऐसी शिकायतें मिलने पर प्रशासन कार्रवाई भी कर रहा है। कई दुकानदारों को दंडित किया गया है। फिर भी सार्वजनिक वितरण प्रणाली वाली राशन की दुकानों पर दिन भर लोगों की कतारें लगी रहती हैं। पंजीकृत लोगों को जरूरत भर का राशन न मिल पाने की शिकायतें आम हैं। ऐसे में गृह मंत्रालय को एक बार फिर सख्त निर्देश जारी करना पड़ा है कि कालाबाजारी और जमाखोरी पर रोक लगनी चाहिए। इसके लिए अधिकारियों को राज्य सरकारों से तालमेल करके जमाखोरों और कालाबजारी करने वालों के खिलाफ सख्त कदम उठाने का आदेश दिया गया है। देखना है, इसका कितना असर पड़ता है। यह नया अनुभव नहीं है, जब कोई महामारी फैलती है, अकाल पड़ता, खेती पर मौसम का बुरा असर दिखता या विदेशों से किसी खाद्य सामग्री की आवक रुक जाती है, तो जमाखोर सक्रिय हो जाते हैं। वे खाद्य सामग्री को गोदामों में रोक कर रख लेते हैं। इस तरह बाजार में उनकी कीमतें मनमाने ढंग से बढ़ने लगती हैं। खाद्य तेल, प्याज-टमाटर और दालों के मामले में जमाखोरों के ऐसे खेल अनेक मौकों पर देखे जा चुके हैं। हालांकि इस वक्त पूर्णबंदी होने की वजह से माल ढुलाई पर भी बुरा असर पड़ा है, जिसके चलते वस्तुएं एक से दूसरी जगहों तक सहजता से नहीं पहुंच पा रही हैं। नहीं तो फल-सब्जी जैसी वस्तुओं की उपलब्धता में कोई कमी नहीं आई है। स्थिति यह है कि बहुत सारे किसानों को सब्जियां फेंकनी पड़ रही हैं। जाहिर है, उनकी कीमतें सामान्य दिनों से कम होनी चाहिए। पर बहुत सारी दुकानों पर इनकी कीमतें बढ़ी हुई ही मिल रही हैं। फैक्ट्री से बन कर आए आटा, चावल, दाल, डिब्बाबंद खाद्य सामग्री की कीमतें भी सामान्य दिनों से अधिक देखी जा रही हैं। जाहिर है, इसमें कालाबाजारी और जमाखोरी हो रही है। यह संकट का समय है और इस समय लोगों को जरूरी खाद्य सामग्री नहीं मिल पाएगी, तो मुश्किलें बढ़ेंगी ही। इसलिए जमाखोरी और कालाबजारी जैसी मुनाफेखोरी की प्रवृत्ति पर रोक लगाने का गृह मंत्रालय का फैसला उचित है। हालांकि किसानों और कारखानों से बाजार तक वस्तुओं की पहुंच सुगम बनाने की जरूरत से भी इनकार नहीं किया जा सकता। कई राज्यों की सीमाएं बंद होने की वजह से वहां से आने वाली वस्तुओं की पहुंच बाधित हुई है। माल ढुलाई की रफ्तार पहले जैसी नहीं रह गई है, जबकि वस्तुओं की मांग में कमी नहीं आई है।

खाद्य सुरक्षा का चक्र

वीरेंद्र कुमार पैन्यूली

यह भी निर्विवाद है कि आपदाएं कोई भी हों, उनसे अशक्त, कुपोषित लोग जल्दी और ज्यादा प्रभावित होते हैं। इसलिए कोरोना जैसी दुर्भाग्यपूर्ण आकस्मिक आपदाओं की तैयारियों के क्रम में कुपोषण और भुखमरी से लड़ाई निरंतर सामान्य स्थितियों में भी जारी रहनी चाहिए। यह विश्व खाद्य संगठन की प्राथमिकता में भी है। विश्व खाद्य सम्मेलन-1995 में संकल्प लिया गया था कि 2015 तक विश्व के आधे भूखों को भूख की मार से मुक्ति दिला दी जाएगी। इसके बाद 2000 में भी सारे देशों के बीच सहमति बनी थी कि दुनिया में हर किसी को पर्याप्त भोजन और पोषण उपलब्ध होगा। इससे गरीब भी अभावों के दंश से मुक्त होकर उच्च गुणवत्ता वाला जीवन जी सकेंगे।

इसी दिशा में सहस्त्राब्दि विकास लक्ष्य और संशोधित टिकाऊ विकास लक्ष्य में भी 2030 तक शून्य भुखमरी, खाद्य सुरक्षा तथा पोषण के लक्ष्यों तक पहुंच की बात की गई। हालांकि हकीकत यह है कि आज भी वैश्विक स्तर पर पर्याप्त खाद्य सामग्री उपलब्ध होने के बावजूद करीब 8210 लाख लोग हर रात भूखे सोने को मजबूर होते हैं। ऐसी स्थितियां गरीब देशों में ही नहीं, अमेरिका जैसे अमीर देशों में भी हैं। आज ऐसे अरबों लोग विश्व में हैं, जिनकी दैनिक आय सौ रुपए से भी कम है। भारत में ही करीब पैंतीस से चालीस करोड़ लोगों को खाना जुटाने का संकट रहता है। खाद्य सुरक्षा पर सक्रिय रही पिछली यूपीए सरकार का तब अनुमान था कि देश में खाद्य असुरक्षा के संकट में फंसे लोगों की संख्या सत्तर करोड़ से ज्यादा है।

गरीबी के साथ ही खाद्य असुरक्षा और कुपोषण के संकट में पड़े लोगों की संख्या प्राकृतिक या मानवजनित आपदाओं के साथ वृहद स्तर पर आर्थिक मंदी आने के साथ और बढ़ जाती है। 2009 की आर्थिक मंदी में ही वैश्विक स्तर पर लगभग दस करोड़ नए लोग भूखों की तादाद में जुड़े थे। आपदाओं में स्वास्थ्य आपदाएं गरीबों और कुपोषितों के लिए काफी मारक होती हैं। ये स्थानीय महामारी या वैश्विक महामारी जनित होती हैं। यों तो हर प्रकार की आपदा में कुपोषित लोगों की सदा संक्रमण की चपेट में आने की ज्यादा संभावनाएं होती हैं, पर अन्य प्रकार की आपदाओं से भी ज्यादा महामारी जनित आपदाओं में यह सतर्कता आवश्यक हो जाती है कि कुपोषण या भुखमरी की पुरानी समस्याओं के साथ-साथ कुपोषण और भुखमरी के नए मामले न बढ़ जाएं। आशंका इसलिए भी रहती है कि आपदाओं के दौरान काम न कर सकने या काम न मिल सकने के कारण पारिवारिक और व्यक्तिगत गरीबी में भी वृद्धि हो जाती है। इसी परिप्रेक्ष्य में कोविड-19 जैसी वैश्विक महामारी पर भी विचार करना सामयिक होगा।

संयुक्त राष्ट्र के महासचिव एंटोनियो गुतारेस का कहना है कि संयुक्त राष्ट्र के पचहत्तर साल के इतिहास में पहले ऐसा कोई वैश्विक स्वास्थ्य संकट नहीं आया, जिसने इस स्तर तक मानव जीवन की मुश्किलें और वैश्विक आर्थिकी को चोट पहुंचाया हो। उन्होंने कहा कि हमें उन लोगों पर ध्यान केंद्रित करना है, जो खासकर बहुत कम मजदूरी पाते और अनौपचारिक आर्थिकी के क्षेत्र में काम करते हैं।

चूंकि इस विषाणु को हराने, सीमित करने या तीसरे चरण तक पहुंचने से रोकने के लिए प्रभावित श्रृंखला को तोड़ना, सामाजिक दूरी बनाए रखना या स्वयं को घरों में कैद कर देना एक प्रभावी उपाय के तौर पर अपनाया जा रहा है, इसलिए भी खासकर अनौपचारिक व्यवसायों में काम करने वालों और दिहाड़ी मजदूरों की व्यक्तिगत तथा पारिवारिक आय पर भारी असर पड़ा है। लगभग पूरे विश्व में बंदी के कारण भुखमरी और गरीबी में जीने वालों की संख्या में बढ़ोतरी की आशंका बढ़ गई है। दुनिया भर में करीब ढाई करोड़ नौकरियां कोरोना से खत्म हो गई हैं। यह संख्या अभी और बढ़ सकती है। भारत में ही करीब पचास प्रतिशत कंपनियां महामारी जनित वातावरण से प्रभावित हुई हैं।

करोड़ों लोगों की नौकरियां प्रभावित हुई हैं। करीब अस्सी प्रतिशत कंपनियों में नगदी प्रवाह में कमी आई है। इससे औपचारिक क्षेत्र में भी काम करने वालों के पास पैसे की कमी हो गई है। संयुक्त राष्ट्र की एक संस्था के अनुसार साल के अंत तक करीब करीब 3.4 खरब डॉलर की श्रमिक आय खत्म हो सकती है। और ज्यादा लोग न बेकार हो जाएं, इसलिए धनी देश भी अपने-अपने यहां की कंपनियों से अनुरोध कर रहे हैं कि वे अपने कामगारों को नौकरियों से न निकालें। वे उनके करों, कर्जों आदि में रियायत देने के साथ-साथ उनसे यह भी कह रही हैं कि उनके कामगारों को दिए जाने वाले वेतन का एक बड़ा हिस्सा सरकार देने को तैयार है।

समाचारों के अनुसार स्वीडन ने 90, डेनमार्क ने 75, इग्लैंड ने 89 प्रतिशत तक वेतन भार वहन करने की कंपनियों से पेशकश की है। भारत सरकर ने भी कंपनियों को निर्देश दिया है कि वे अपने कर्मचारियों को न हटाएं और न उनका वेतन काटें। विभिन्न राज्य लाखों दिहाड़ी श्रमिकों को सस्ता राशन देने और सीधे खाते में पैसा पहुंचाने की घोषणा कर चुके हैं। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री ने कहा है कि राज्य के पंजीकृत पंद्रह लाख दिहाड़ी मजदूरों और बीस लाख सैंतीस हजार निर्माण श्रमिकों को उनकी दैनिक जरूरतों के लिए एक हजार रुपए प्रति माह देंगे। राज्यों द्वारा घोषित ऐसी सहायताओं से श्रमिकों का गुजारा नहीं होता है। इसलिए लोग अपने मूल निवास स्थानों को लौटने को बेचैन रहते हैं, भगदड़ भी मचाते हैं। इनसे गांव तक संक्रमण पहुंचने का खतरा हो सकता है। जैसा इस समय हो रहा है, जब दुकानों, परिवहन आदि के बंद होने का सचजगह-जगह दिखने लगता है, तो सबसे बड़ी चिंता पारिवारिक स्तर पर यह हो जाती है कि घर में खाने-पीने का इतना सामान रख लिया जाए कि अगर बाजार बंद मिले या दुकानों में सामान न मिले तो भी घर में खाने के लिए कुछ तो हो। ऐसी हालत कितनी लंबी चलेगी, इस पर भी संशय रहता है। ऐसे में कुछ संपन्न लोग हड़बड़ी में खरीदारी करने की होड़ में लग जाते हैं, तो पहले से ही हाशिए पर पड़े समूह रोजगार न होने या छिनने के कारण आवश्यक भोजन भी जुटाने में असमर्थ होने लगते हैं। सामान की किल्लत के डर से जब भीड़ उमड़ती है, तो सोशल डिस्टेसिंग की सलाह भी अनसुनी कर दी जाती है। भीड़भाड़ से खुद को संक्रमित होने से बचाने के लिए जब कुछ दुकानदार खुद ही दुकान बंद करने लगते हैं, तब सामान नहीं मिलेगा, दुकानें बंद हो जाएंगी जैसी अफवाहों को और हवा मिलने लगती है। अब तो देश में पूर्णबंदी है। कई बार सीमाएं भी परिवहन के लिए सील कर दी जाती हैं। परिवहन और मानव संसाधन की कमी के चलते आपूर्ति श्रृंखला प्रभावित होती है। ऐसे में दिक्कतें आने लगती हैं। ऐसे समय कई दुकानदार नकली और मिलावटी सामान बेचने से भी बाज नहीं आते हैं। यह दूसरी बीमारियों की संभावनाएं बढ़ा देता है।

खाद्य सुरक्षा के संदर्भ में आपूर्ति का मतलब भरासेमंद, अबाध आपूर्ति होता है। बनी हुई आपूर्ति के बावजूद खाद्यान्न तक पहुंच की व्यवस्था करना भी अपरिहार्य होता है। पहुंच का संदर्भ आर्थिक और सामाजिक भी होता है। अन्यथा खाद्यान्न उत्पादन ग्रामीण क्षेत्रों में होने पर भी गांवों में खाद्य असुरक्षा और कुपोषण की समस्या क्यों होती या परिवारों में महिलाओं द्वारा भोजन बनाने पर भी खाद्य असुरक्षा और कुपोषण की समस्या उनके साथ अपेक्षाकृत ज्यादा क्यों बनी रहती। वैसे भी हर आपदा प्रबंधन की रणनीति में चेतावनी के साथ आपदा झेलने के लिए की गई तैयारियों का भी महत्त्व होता है। यह भी निर्विवाद है कि आपदाएं कोई भी हों, अशक्त, कुपोषित लोग जल्दी और ज्यादा प्रभावित होते हैं। इसलिए कोरोना जैसी दुर्भाग्यपूर्ण आकस्मिक आपदाओं की तैयारियों के क्रम में कुपोषण और भुखमरी से लड़ाई निरंतर सामान्य स्थितियों में भी जारी रहनी चाहिए। यह विश्व खाद्य संगठन की प्राथमिकता में भी है।

आपदा

बड़ी गलती वर्तमान सरकार कर रही है

सनत जैन

यह उस समय की बात है, जब देश में आर्थिक आधार पर कोई बहुत ज्यादा सोच नहीं थी। 2004 के बाद से जिस तरह के सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन देश में हुए हैं। उसके बाद भारत के नागरिक सरकार के ऊपर हर मामले में आश्रित हुए हैं। ऐसे समय में सरकार को यदि वास्तविक जानकारी नहीं मिलेगी। मीडिया और न्यायपालिका सरकार के साथ कदमताल करेंगे। ऐसी स्थिति में जनता को उन पर भरोसा होगा? चारों स्तंभ में से कौन सा स्तंभ होगा, जो संकट के समय जनता को भरोसा दिला पाएगा।

अभी तक विधायिका और कार्यपालिका के निर्णय से यदि कोई व्यक्ति, समुदाय असहमत होता था। तो वह न्यायपालिका में जाकर न्याय प्राप्त करता था। आम आदमी को यह विश्वास था, न्यायपालिका उसकी बात सुनेगी। संविधान के अनुरूप उसके साथ न्याय करेंगी। पिछले कुछ वर्षो में न्यायपालिका एक तरह से सरकार के सहयोगी के रूप में काम कर रही है। जिसके कारण जनता का भरोसा न्यायपालिका पर बहुत कम हो गया है। हाल ही में देश में बड़ी बड़ी घटनाएं हुई। लोग हाईकोर्ट सुप्रीम कोर्ट गए। उन्हें न्याय पाने में इतना समय लगा कि उस न्याय का कोई मतलब ही नहीं रह गया। न्यायपालिका ने कई महत्वपूर्ण मामलों की याचिकायें ही सुनने से ही मना कर दिया। अब तो यह भी होने लगा है, कि न्यायपालिका याचिकाओं को खारिज करने के साथ उस पर जुमार्ना भी लगा देती हैं। सुप्रीम कोर्ट में पिछले 6 माह में कई ऐसे मामले लंबित हैं। जिन की त्वरित सुनवाई होनी थी। जो आज तक नहीं हुई। हाईकोर्ट में जो याचिकाएं लगी थी। वह भी सुप्रीम कोर्ट ने अपने पास बुला ली, और

1975 में इंदिरा गांधी ने भारत में आपातकाल लागू किया था। इस आपातकाल में न्यायालय की शक्तियों को कम किया गया था। सरकार किसी भी व्यक्ति को बिना किसी अपराध के जेलों में बंद कर सकती थी। मीडिया में सेंसरशिप लागू हो गई थी। समाचार पत्रों में वही छपता था जो सरकार चाहती थी। दूरदर्शन और आकाशवाणी सरकार के नियंत्रण में थे। वह सरकार का गुणगान करते थे। सेंसरशिप के कारण तब की सरकार को, आपातकाल के दौरान क्या हुआ। इसका पता नहीं चला। चुनाव हुए, इंदिरा गांधी को सत्ता से अपदस्थ होना पड़ा था।

उस पर आज तक सुनवाई नहीं की। पिछले वर्षों में मीडिया भी चौथे स्तंभ के रूप में जनता का प्रतिनिधित्व ना करके सरकार का प्रतिनिधि बनकर काम कर रहा है। आज जितने भी न्यूज चैनल और समाचार पत्र हैं। वह सरकार द्वारा कही हुई बातों और सोच को ही आगे बढ़ा रहे हैं। जनता के बीच से रिपोर्टिंग करने, उनकी बात जानने या उनका पक्ष रखने का कोई भी प्रयास मीडिया में नहीं हो रहा है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी, कि दूरदर्शन और आकाशवाणी की तरह अब लगभग सभी न्यूज चैनल और समाचार पत्र भी सरकार के लिए अप्रत्यक्ष रूप से काम कर रहे हैं। यदा-कदा यह भी कहा जाता है, कि अघोषित रूप से सेंसरशिप लगी हुई है। ऐसी स्थिति में जनता के बीच न्यूज चैनल की विश्वसनीयता लगभग खत्म हो गई है। आम जनता के बीच में पिछले वर्षों में इसे गोदी मीडिया का नाम दिया गया है। न्यूज चैनलां की टीआरपी बहुत कम हो गई है। समाचार पत्रों से भी आम जनता और उनकी समस्यायें गायब है। जिससे मीडिया विश्वसनीयता संदेह के घेर में है।

कोरोनावायरस के संक्रमण से सारी दुनिया में हड़कंप मचा हुआ है। हजारों लोग रोज सारी दुनिया में मर रहे हैं। दुनिया भर में फैले कामगार बेरोजगार हो रहे हैं। सैकड़ों देशों में लाकडाउन के कारण उद्योग, व्यापार और सेवा के क्षेत्र में रोजगार के साधन लगभग लगभग खत्म हो गए हैं। विश्व बैंक का कहना है कि भारत सहित सारी दुनिया के देशों में भयंकर मंदी आने वाली है। 2008 की मंदी के सामने यह मंदी बहुत भयानक होगी। जो 100 वर्ष पुरानी मंदी की याद दिलाएगी।

भारत के 1 करोड़ 75 लाख प्रवासी भारतीय सारी दुनिया के देशों में काम करते हैं। इसमें एक करोड़ 25 लाख लोग मजदूर के रूप में अमेरिका सऊदी अरब इत्यादि देशों में कार्यरत हैं। यह प्रवासी भारतीय भारत में 78.6 बिलियन डालर की कमाई करके भेजते थे। लेकिन यह सब बेरोजगार होकर, उन देशों में फंसे हुए हैं। कुछ हजार ही अभी देश वापस आए हैं। जैसे ही अंतरराष्ट्रीय हवाई यात्रा शुरू होगी। बड़ी संख्या में प्रवासी भारतीय वापस लौटेंगे। भारत में 21 दिन का लॉकडाउन लागू किया गया है। लाकडाउन की घोषणा के 4 घंटे की अवधि में ट्रेन बस और सारे परिवहन के साधन बंद कर दिए गए। भारत में ही विभिन्न राज्यों के लगभग 5 करोड़ कामगार दूसरे राज्यों में जाकर महानगरों बड़े नगरों तथा अपने घर से सैकड़ों मील दूर छोटे शहरों में कार्य कर रहे थे। जनता कर्फ्यू लागू होने के बाद जो जहां है, वही रहे। इस आदेश का पालन इसलिए नहीं हो पाया कि जो भारतीय कामगार अपनी रोजी रोटी के लिए सैकड़ों किलोमीटर दूर गया था। उसे दूसरे दिन काम नहीं मिला। जहां काम कर रहे थे, वहां से उन्हें भगा दिया गया। वह सड़क पर रहते थे, रेहड़ी लगाते थे, वहीं सो जाते थे। दूसरे दिन उन्हें ना तो खाना मिला, ना रहने की जगह मिली। ऊपर से पुलिस के डंडे मिलने से लाखों की संख्या में लोग अपने घरों की ओर पैदल ही भागे। पिछले 16 दिन से भारत में सभी औद्योगिक प्रतिष्ठान और कारोबार बंद हैं। स्माल एवं मध्यम उद्योग बंद है। छोटे बड़े सभी कारोबार बंद है। विभिन्न प्रदेशों में लाखों की संख्या में दूसरे प्रदेशों से आए हुए कामगारों में से 25 फीसदी अपने-अपने राज्यों में पैदल ही वापस हो गए हैं। लाकडाउन खुलने के बाद जैसे ही रेल और बसें शुरू होंगी। कामगार और मजदूर कब वापस आएंगे, इसका भी कोई भरोसा नहीं है। आर्थिक मंदी के इस दौर में सरकार कैसे उद्योग धंधों को पुनः शुरू करा पाएगी। इसको लेकर आर्थिक जगत में बड़ी चिंता व्यक्त की जा रही है। केंद्र सरकार किसानों तथा मनरेगा के मजदूरों तथा केंद्रीय योजनाओं में विभिन्न मदों में दी जाने वाली सहायता राशि भी नहीं दे पा रही है। राज्यों की आर्थिक हालत इतनी खराब है, कि उन्हें वेतन बांटने के लिए अब हर माह कर्ज लेना पड़ रहा है। केंद्र सरकार तथा महाराष्ट्र राजस्थान तेलंगाना और आंध्र प्रदेश की सरकारों ने अपने कर्मचारियों के वेतन में कटौती कर दी है। विधायकों और मंत्रियों के वेतन कम कर दिए हैं। केंद्र सरकार ने सांसदों की सांसद निधि 2 साल के लिए रोक दी है। ऐसे संक्रमण काल में यदि गरीबों तक उनकी जरूरतों का सामान और खाने पीने की चीजें मुहैया नहीं करा पाए। देश में किस तरीके की स्थिति बनेगी, इसका अंदाजाभर लगाया जा सकता है।

ज्ञान गंगा

निराशा से होती है हार

नियति प्रम के निरंतर उल्लंघन से प्रकृति का अदृश्य वातावरण भी इन दिनों कम दूषित नहीं हो रहा है। भूकम्प, तूफान, बाढ़, विद्रोह, अपराध, महामारियां आदि पर नियंत्रण पाना कैसे संभव होगा, समझ नहीं आता। किंकर्त्तव्यविमूढ़ स्थिति में पहुंचा हतप्रभ व्यक्ति प्रमशः अधिक निराश होता है। इतना साहस और पराक्रम तो विरलों में होता है, जो आंधी, तूफानों के बीच भी आशा का दीपक जलाए रह सकें, गतिशीलता में कमी न आने दें। ऐसे व्यक्तियों को महामानव-देवदूत कहा जाता है पर वे यदाकदा ही प्रकट होते हैं। आज जनसाधारण का मानस ऐसे ही दलदल में फंसा है। होना तो चाहिए था कि अनौचित्य के स्थान पर औचित्य को प्रतिष्ठत करने के लिए साहसिक पुरुषार्थ जगता पर लोक मानस में उस स्तर का उच्च स्तरीय उत्साह नहीं उभर रहा है। इन परिस्थितियों में साधारण जनमानस का निराश होना स्वाभाविक है। समझ लेना चाहिए कि निराशा हल्के दर्जे की बीमारी नहीं है, वह जहां भी जड़ जमाती है, घुन की तरह मजबूत शहतीर को भी खोखला करती जाती है। निराशा अपने साथ हार जैसे मान्यता संजोए रहती है। इतने दबावों से दबा आदमी स्वयं तो टूटता ही है, साथियों को भी तोड़ता है। इससे शक्ति का अपहरण होता है, जीवनी शक्ति जबाव दे जाती है, तनाव बढ़ते जाने से उद्विग्नता बनी रहती है और ऐसे रचनात्मक उपाय नहीं दिखते, जिनके सहारे तेज बहाव वाली नाव खेकर पार पाया जाता है। निराश व्यक्ति जीत की संभावना नकारने के कारण जीती बाजी हारते हैं। निराशा न किसी गिरे को ऊंचा उठने देती है और न प्रगति की किसी योजना को प्रियान्वित होने देती है। अस्तु, निराशा को छोटी बात न मानकर उसके निराकरण का हर क्षेत्र में प्रयत्न होता रहे। जहां भी निराशा का माहौल हो, उसके निराकरण का हर संभव उपाय करना चाहिए। इसका उपचार यही है कि प्रतिरोध में समर्थ चिंतन और पुरुषार्थ के लिए जन-जन की विचारशक्ति को उत्तेजित किया जाए। उज्ज्वल भविष्य की संभावनाओं पर ध्यान देने और उन्हें समर्थ बनाने के लिए जिस मनोवृत्ति को उत्साहपूर्ण प्रश्रय मिलना चाहिए, उसके लिए आवश्यक पृष्ठभूमि तैयार की जाए।

twitter

कुछ लोग ऐसी अफवाहें फैला रहे हैं कि प्रदेश के कोविड 19 से संक्रमित कुछ अधिकारियों को देखभाल में ज्यादा तवज्जो दी जा रही है और बाकी लोगों को सही इलाज नहीं दिया जा रहा है। मेरे लिए प्रदेश का हर एक व्यक्ति एक समान है, हर एक नागरिक भगवान है!

\- शिवराज सिंह चौहान

भारतीय संस्कृति में गौमाता का स्थान बेहद पूजनीय है। गौमाता की सेवा करना परोपकार के साथ आनंद की भी अनुभूति प्रदान करता है। कोरोना महामारी से इस जंग में सभी मूक पशुओं , जीवों की सेवा और सुरक्षा करना बेहद आवश्यक है। गौमाताओं की सेवा भी अत्यंत जरूरी है।

\- कमल नाथ

कोविद 19 के खिलाफ लड़ाई में दूसरों के जीवन की रक्षा करते हुए डॉक्टर शत्रुघ्न पंजवानी जी ने अपना अमूल्य जीवन न्योछावर कर दिया। उन्होंने मानवता की सेवा ही अपना धर्म समझा। पूरा प्रदेश उनका आभारी रहेगा। ईश्वर उन्हें अपने श्री चरणों में स्थान दे।
!! विनम्र श्रद्धांजलि !!

\- वीडी शर्मा

त्याग और बलिदान का दिन पुण्य शुक्रवार

फादर आनंद मुंदूगल

ईसाई समाज पुण्य शुक्रवार के पहले 40 दिन उपवास एवं प्रार्थना करते है। उपवास, दान-धर्म एवं गंभीर प्रार्थना ही पश्चाताप की स्वीकृति का संकेत है। इस 40 दिन की तैयारी हर एक ईसाई को यह याद दिलाता है कि जो आज की चमक-धमक दिख रही है वो सब कठिनाई के समय में हमें छोडकर चली जाएगी। अन्याय का शिकार बनकर येसु ने अपना क्रूस कलवारी तक ढो लिया था। हर एक व्यक्ति को अपना क्रूस ढोना पड़ता है। दैनिक जीवन में या है यह क्रूस, हमारे परिवार की समस्याएं, काम में असंतोष, मानसिक तनाव, असहयोगी पड़ोसी हमारे सामने क्रूस का रूप लेकर आता है। हर एक ईसाई जब क्रूस की ओर देखता है तो उसे यह प्रेरणा देता है कि प्रभु येसु के समान वे भी एक ना एक दिन सफल होंगे। प्रभु येसु का मूल मंत्र प्रेम था जहां प्रेम है वहां न्याय है, शांति है इसलिए उन्होंने समाज के अन्याय के खिलाफ प्रेम के उस अस्त्र का ऐसे उपयोग किया कि एक नए समाज का निर्माण हो, लेकिन इसके लिए उन्हें अपनी जान गवानी पड़ी। प्रभु येसु का कहना था कि "जब तक दाना मिट्टी में गिर कर मन ना जाए, तब तक नए अंग का जन्म नहीं होता है। यदि हम

ईसाई धर्म का सबसे महत्वपूर्ण दिन है गुड फ्रायडे इसका अर्थ है पुण्य शुक्रवार। इस दिन को मनाने के लिए ईसाई धर्मावलंबियों द्वारा 40 दिन के उपवास एवं क्रार्थना के साथ तैयारी की जाती है। 40 दिन का उपवास ही बहुत महत्वपूर्ण है। परम्परा के अनुसार प्रभु येसु ने अपने सार्वजनिक कार्य को प्रारंभ करने से पहले 40 दिन एवं रात उपवास एवं प्रार्थना में बिताए थे।

समाज में सुधार लाना चाहते है तो हमें प्रभु येसु खीस्त समाज सुधारक का उदाहरण है। पुण्य शुक्रवार हमें ऐसे समाज के निर्माण के लिए प्रेरित करता है जहां अन्याय और अशांति है शायद हम हमारे हर तरफ के भेदभावों को भूलाकर एक ऐसे समाज का निर्माण करना होगा जिसका आधार प्रेम हो। ईसाई समाज प्रभु येसु के दुखभोग एवं मृत्यु का स्मरण करने के लिए विभिन्न गिरजाघरों में एकत्रित होते हैं। प्रभु येसु खीस्त का दुखभोग एवं मृत्यु का स्मरण करने के साथ-साथ प्रभु येसु खीस्त ने अपने प्राण देकर जो नई उमीद की राह बताई है उस मार्ग पर चलने का संकल्प खुद ही करते है। प्रभु येसु ने हमें यह सिद्ध कर दिया है कि जीवन बचाने का अर्थ है कि उसे दूसरों की सेवा में अर्पित कर देना है। जब हम अपना जीवन दूसरों के हित के लिए व्यतीत करते है तब हमें वास्तव में अव्यक्त खुशी महसुस होती है। क्रूस पर आकाश और पृथ्वी के बीच प्रभु ने कहा "सब कुछ पूरा हो चुका है यह कहकर उन्होंने सर झूकाकर अपने प्राण त्याग दिऐ यह अंतिम शब्द हमारे विचारों की शुरूआत होने चाहिए। प्रभु को दोषी ठहराया जाना और क्रूस पर मृत्यु सहन करना, उनके जीवन के समर्पण की निशानी थी। उन्होंने स्वयं अपने आप को मानव जाति की रक्षा के लिए अर्पित किया। ईश्वर चाहता था कि येसु लोगों को पिता का प्यार एवं दया को प्रकट करे। ईश्वर चाहता था कि येसु लोगों को सिखाये कि ईश्वर पिता है, और हम सब विभिन्न भाषा बोलने वाले, विभिन्न जाति को मानने वाले, विभिन्न देशों में रहने वाले, विभिन्न विचारधाराओं को मानने वाले हैं, फिर भी हम सब एक ही ईश्वर की संतान है। इसलिए हमें भाई-बहनों के जैसे एक-दूसरे की रक्षा करते हुए प्रेम और सहन के मार्ग पर चलना है।

शायद ही इतिहास में ऐसी घटना हो जो न्याय और गरीबों के उद्धार के लिए अपने आप को बली चढ़ाए वो भी क्रूस पर। ईसाई समाज आज गुड फ्रायडे मनाते है, जिसका अर्थ है पुण्य शुक्रवार। क्योंकि प्रभु येसु ने अपने मरण द्वारा उस शुक्रवार को हमेशा-हमेशा के लिए एक यादगार बनाया और जिसे थके मांदि लोगों के लिए एक नया मार्ग दिखाया। प्रभु येसु खीस्त के दुखभोग एवं मरण हमें यह संकेत देता है कि इंसान को इंसानियत के लिए काम करना है जो अपने आप को इंसानियत की रक्षा के लिए अर्पित करेगा ईश्वर उसका उद्धार करेगा। इस दुनिया का जीवन क्षण भंगूर है, लेकिन ईश्वरमय जीवन हमेशा-हमेशा के लिए है।

बरेठा परिवार का एक युवक पॉजिटिव, कोरोना संक्रमित हुए 14

मुरैना। जिला कलेक्टर श्रीमती प्रियंका दास में शुक्रवार की शाम बताया कि विगत दिवस जो जो सैंपल भेजे गए थे उनमें 42 की रिपोर्ट आई है, जिसमें कोरोना संक्रमित सुरेश बरेठा के बड़े भाई का लड़का भी पॉजिटिव आया है, बाकी सभी 41 रिपोर्ट नेगेटिव आई हैं। इसी युवक का 3 दिन पहले जब सैंपल लिया गया था तब उसकी रिपोर्ट नेगेटिव आई थी, इसे देखते हुए वार्ड 47 को हॉटस्पॉट में रखा गया है और प्रशासन वहां सैनिटाइजेशन के साथ-साथ आज शनिवार से साबुन का वितरण करेगा एवं वहां के सभी लोगों को घरों में रहने की अपील की गई ह।

कलेक्टर श्रीमती दास ने बताया कि बाढ़ 47 मैं सुरेश बरेठा के संपर्क में आए सभी लोगों के सैंपल नेगेटिव आने के बाद उन्हें घर में ही होम क्वॉरेंटाइन किया गया है और उन्हें सलाह दी गई है कि वह अपने घरों में रहे और किसी से भी संपर्क न करें। उन्हें राशन सामग्री सब्जी आदि की उपलब्धता घर पर ही कराई जाएगी। इसके साथ ही जब तक वह पूरी तरह स्वस्थ नहीं हो जाएंगे, तब तक समय-समय पर उनका चेकअप चिकित्सकीय टीम द्वारा किया जाता रहेगा। कलेक्टर ने बताया कि 3 दिन पहले जगदीश बरेठा के पुत्र का सैंपल जब जांच हो कर आया था, तब उसकी रिपोर्ट नेगेटिव आई थी, उसके स्वस्थ न होने के पश्चात 2 दिन पहले पुनः उसका सैंपल लेकर जांच हेतु भेजा गया था, जिसमें रिपोर्ट पॉजिटिव आई है। कलेक्टर श्रीमती प्रियंका दास ने बताया कि नेगेटिव होने का मतलब यह नहीं है कि संक्रमित व्यक्ति पूरी तरह से स्वस्थ हो गया है, प्रत्येक व्यक्ति के शरीर की रोग-प्रतिरोधक क्षमता अलग -अलग होती है। उन्होंने बताया कि शहर व जिले भर में कोरोना संक्रमण रोकने के लिए पूरी सतर्कता बरती जा रही है। दिल्ली व इंदौर से आए मजदूर एवं अन्य लोगों को भी चिन्हित कर सैंपल लिए जाएंगे और जांच हेतु भेजे जाएंगे। वार्ड क्रमांक 47 से जुड़े चार अन्य वार्डों मैं भी सतर्कता बरती जा रही है, इसके अलावा बीएमओ नूराबाद व बीएमओ जोरा को भी सतर्क किया गया है, क्योंकि उनके क्षेत्र भी इनसे लगे हुए हैं।

युवक ने फांसी लगाकर की आत्महत्या पुलिस ने किया मर्ग कायम कारण अज्ञात

मोहन मांझी रिपोर्टर

गोहदद्ध थाना क्षेत्र के चितौरा गांव निवासी धर्मेंद्र उर्फ बंटी बाथम पुत्र गंभीर बाथम उम्र लगभग 40 वर्ष ने अज्ञात कारणों के चलते घर में छत के कुंडे से लटककर फांसी लगा ली जिससे उसकी घटनास्थल पर ही मौत हो गई जिसकी सूचना डायल हंड्रेड पर मिली डायल 100 एवं पुलिस ने मौके पर पहुंचकर मृतक के शव को नीचे उतारा और अस्पताल ले गए जहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया मृतक का पोस्टमार्टम कराकर परिजनों को सुपुर्द किया एवं पुलिस ने मामला कायम कर विवेचना में लिया।

कोरोना संकट मैं मदद को बड़े हाथ

सबलगढ़। भारतीय जनता पार्टी सबलगढ़ नगर मंडल अध्यक्ष अवधेश गोयल के नेतृत्व में शहर के विभिन्न वार्डो में एवं आस पास के क्षेत्र में बसे गरीब असहाय दिहाडी मजदूर परिवारो को लगातार घर-घर जाकर पैकेट एवं कच्चा राशन जैसे आटा-दाल, आलू, तेल ,नमक, मिर्च, धनिया, हल्दी, हाथ धोने के लिए लाइफबॉय साबुन वितिरित किये जा रहे है। अभी तक करीव 650 परिवारों तक सूखा राशन सामग्री पहुंचायी जा चुकी है। भाजपा नगर मंडल अध्यक्ष अवधेश गोयल का कहना है कि हमारा यह एक छोटा सा प्रयास है, जिसमें हमारी कोशिश रहेगी कि कोई भी ब्यक्ति भूखा न सोए।

संपूर्ण लॉक डाउन से मजदूर वर्ग के लोग राशन के लिए परेशान

झुंडपुरा। कोरोना वायरस के संक्रमण को रोकने के लिए सरकार ने जो 21 दिन का लॉकडाउन किया है वह अब झुंडपुरा के जरूरतमंद और गरीब परिवारों पर भारी पडने लगा है। कई दिनों से इस वर्ग के लोग राशन के लिए परेशान हो रहे है, जबकि सबलगढ़, रामपुर क्षेत्र में राशन की डिलीवरी हेतु वाहन की व्यवस्था शुरू की गई है। अभी तक नगर परिषद झुंडपुरा में ऐसी कोई भी दुकान नियुक्त नहीं की गई जहां से मजदूर वर्ग एवं जरूरतमंदों को राशन उपलब्ध हो सके। स्थानीय निवासियों को कहना है कि प्रशासन व जिम्मेदार पदाधिकारियों का इस और ध्यान नही है। महिलाओं ने कहना है कि उनके घरों में राशन नहीं है। खाने के लिए कुछ मिल नहीं रहा है, ऐसे में वह क्या खाएं और अपने बच्चों को क्या खिलाएं। लॉकडाउन के कारण जो मेहनत मजदूरी कर लेते थे, वह भी नहीं कर पा रहे हैं। अब उनके भूखे मरने की नौबत आ गई है। इस बात को लेकर स्थानीय वरिष्ठ पार्षद नरेंद्र देव रविकर व युवा भाजपा नेता निशांत बुधौलिया ने तहसीलदार, एसडीएम से निवेदन किया है कि झुंडपुरा नगर परिषद में कुछ दुकानों को चिन्हित करें या राशन डिलीवरी हेतु वाहन की व्यवस्था करें, जिससे जरूरतमंद लोग राशन पूर्ति कर सके और घर में रहकर लॉकडाउन का पालन कर सकें। निशांत बुधौलिया का कहना है कि झुंडपुरा में दर्जनों ऐसे परिवार हैं जिनके पास न तो राशन कार्ड हैं और न ही उनके पास राशन संबंधी पात्रता पर्चियां है। इस कारण उनको राशन नहीं मिल पाया है। इनकी फिलहाल कोई सुनवाई नहीं हो रही है। भले ही प्रशासन हर व्यक्ति को तीन महीने तक का राशन दिए जाने की बात कह रहा हो। लेकिन गरीव मजदूर का दर्द गंभीर है। लॉकडाउन के कारण 15 दिन से काम धंधे बंद हैं। दो वक्त की रोटी के लिए लोग मोहताज हो गए हैं। इसके बाद भी प्रशासन कोई कार्य योजना नहीं बना पा रहा है। गरीबी के हालातों से गुजर रहे यहां के परिवारों की सुनवाई नहीं हो रही है, मजदूर वर्ग के घरों में राशन नहीं है वे क्या खुद खाएं और क्या बच्चों को खिलाएं। विदित हो कि झुंडपुरा में 50 फीसदी से ज्यादा लोग मजदूरी से जुडे है, जो अब भोजन के लिए तरस रहे हैं। आपको बता दें कि नगर में 50 फीसदी से ज्यादा लोग ऐसे हैं जो मजदूरी से जुडे है। लॉकडाउन के चलते काम धंधे बंद हैं इसलिए उनके यहां रोजी रोटी का संकट बढ गया। जिनमें कई परिवार तो ऐसे हैं तो दिहाडी मजदूरी पर ही निर्भर थे। जिनके यहां अब 15 दिन को लॉकडाउन भारी पडने लगा है। जरूरतें पूरी करने के लिए घरों में पैसा नहीं है। खाने के लिए राशन नहीं है। कई परिवार जिनको एक या दो माह पहले सरकारी राशन मिला भी था वह खत्म हो गया है। इसलिए अब उन्हें एक-एक दाने के लिए मौहताज होना पड रहा है।

इनका कहना है...

नगर परिषद झुंडपुरा में राशन की वजह से लोगों को दिक्कत ना आए इसके लिए पहले ही डिलीवरी वाहन शुरू करवा दिए गए हैं यदि पार्षद द्वारा ऐसा कहना है तो इसके लिए हम तहसीलदार द्वारा जानकारी मंगवाते हैं लॉक डाउन के समय लोगों को राशन संबंधी कोई भी किसी भी तरह की समस्या नहीं होगी।

सुरेश वरोदिया, एसडीएम

एक चूक पड़ सकती है भारी प्रशासन अलर्ट

राजा दुबे ब्यूरो

सीहोर कोरोना वायरस के सत्रमण जिले मे पैर न पसार पाये इसलिये जिले के प्रशासनीक अधिकारी पुलिस स्वास्थ विभाग नगर परिषद के समस्त कर्मचारी पुरी मुश्तेदी के साथ कोरोना के खिलाफ जंग के लिये दिन रात मेहनत कर रहै पर कुछ लोगो कि मुर्खता के कारण जिले मे कोरोना दस्तक दे सकता है हालाकि प्रशासन कि सुझबुझ से कोरोना कि दस्तक को रोकने के लिये योजना बनाकर रोकने कि हर सम्भाव कोशीश कि जा रही पर जानकारी के अनुसार बुदनी जनपद के होलीपुरा मे एक व्यक्ति कि मुर्खता देखने मे आयी है बलवान सिंह कीर पिता रमेश कीर निवासी भोपाल कोरोना वायरस पॉजिटिव पाया गया बलवान कीर भोपाल में हॉस्पिटल में काम करता था वह तीन-चार दिन पहले भोपाल से होलीपुरा आया था वे अपने रिश्तेदार के यहां रुका ओर उचाखेडा, मकोडिया (कीर), निनोर सहित कुल चारों गाँवों में अपने रिश्तेदारो के घर पर पहुचा 3 दिन बाद गांव वालों ने उसका चेकअप करवाने के लिए बुधनी स्वास्थ्य केंद्र भिजवाया गया वहां पर परीक्षण करने पर कोरोना वायरस के कुछ लक्षण पाए गए स्वास्थ्य विभाग द्वारा तुरंत ही उसे भोपाल रैफर किया गया आज रिपोर्ट आने पर उसे कोरोना वायरस पॉजिटिव पाया गया प्रशासन एवं डॉक्टरों की टीम चारों गांव में जाकर बलवान जहां जहां गया था व रुका था उन जगह व लोगो को प्रशासन द्वारा चिन्हित किया जा रहा अभी तक लगभग 3 दर्जन से अधिक लोगो को कोरोंटाईन किया जा चुका है पर एक चूक से क्षेत्र मे कोरोना के सत्रमण फैलने से इंकार नही किया जा सकता

कर्मचारी समाजसेवा के भाव से काम करें : एस डी एम

सबलगढ़। एसडीएम सुरेश वरोदिया ने लोगों से कोरोना वायरस के प्रति सजग रहने की अपील की है। दुनियाभर में कोरोना वायरस के प्रकोप को देखते हुए विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसे वैश्विक महामारी घोषित कर दिया है। जिसके बाद जिला प्रशासन भी अलर्ट मोड में आ गया है एसडीएम ने प्रशासन के कर्मचारी-अधिकारियों से कहा कि वायरस के संक्रमण को देखते हुए अब ड्यूटी से भी आगे बढ़कर काम करना होगा। उन्होंने कहा कि पब्लिक की सेवा को समर्पित अधिकारी कर्मचारी अब समाजसेवा के भाव से काम करें और अपना शत-प्रतिशत योगदान दें। एसडीएम ने हरेक स्तर पर लोगों को बीमारी, उसके लक्षण, बचाव के तरीके बताने और एहतियात बरतने को कहा। श्वसन संबंधी बीमारियों को लेकर चिकित्सकों से परामर्श लें और सांस लेने में तकलीफ, बुखार, कफ और खांसी के बाद उल्टी होने पर तत्काल अस्पताल पहुंचकर जांच कराएं। इस अवसर पर एसडीएम ने नगर परिषद सहित नगर पंचायतों में विशेष तौर पर स्वच्छता बनाये रखने व साफ-सफाई को नियमित करने के निर्देश दिये हैं।

सेनेटाइज रूम से होगा कोरोना के संक्रमण से बचावः डॉ असित यादव

मुरैना। मध्यप्रदेश के मुरैना जिले में कोरोना के 13 पॉजिटिव मरीज सामने आ चुके हैं तथा जिले में कोरोना के मरीजों की बढ़ती संख्या को देखते हुए नगर निगम ने पुराने बस स्टैंड पर फुल बॉडी सेनिटाइजर रूम बनाया तो वहीं अब पुलिस अधीक्षक डॉ असित यादव ने अपने कर्मचारियों व आने-जाने वालों के लिए सेनेटाइज रूम का निर्माण कराया है। बैरियर चौराहे और पुलिस लाइन में बनाया गया सेनिटाइज रूम सभी पुलिसकर्मियों के लिए उपलब्ध रहेगा। पुलिस अधीक्षक डॉ असित यादव ने बताया कि सेनेटाइज रूम के माध्यम से कोरोना संक्रमण से पुलिसकर्मी सहित आम जन का बचाव होगा।

डॉ यादव ने बताया कि बडे महानगर उज्जैन, इंदौर व भोपाल में पुलिस जवान 24 घंटे ड्यूटी पर तैनात हैं और वो संक्रमण के शिकार हो रहे हैं। इसको ध्यान में रखते हुए मुरैना पुलिस अधिकारियों ने अपने जवानों के लिए 10 आइसोलेशन रूम और 26 क्वॉरेंटाइन रूम भी तैयार किये हैं। इसके साथ ही दो सेनिटाइज रूम भी बनाये गये है। जिस तरह से पुलिस विभाग, जवान, अधिकारी हर समय ड्यूटी पर तैनात रहकर सभी प्रकार के लौगो से उनका संपर्क हो रहा है, जिससे सबसे अधिक खतरा उन्हीं को है, जिसके चलते सेनिटाइज रूम का निर्माण कराया गया है। यातायात प्रभारी अखिल नागर ने बताया कि पुलिस अधीक्षक डॉ असित यादव के द्वारा आम-जनहित के लिए एवं ड्यूटी पर लगे कर्मचारियों के लिए एक अनूठी पहल शुरू की गई हैं। जिसमें सैनिटाइजर रूम बैरियर चौराहे पर बनवाया गया हैं। जिसका लाभ स्थानीय नागरिक, आम जनता एवं ड्यूटी पर लगे पुलिस के समस्त जवानों को मिलेगा। इस सेनेटाइजेशन रूम की जिम्मेदारी यातायात प्रभारी सूबेदार अखिल नागर और सिविल लाइन थाना प्रभारी विनय यादव को दी गई है। इसके साथ ही पुलिस अधीक्षक डॉ असित यादव ने जौरा थाना प्रभारी नरेंद्र शर्मा के साथ शहर का भ्रमण किया और रास्ते मे निकलने वाले आम नागरिकों को घरों में रहने की सलाह दी, साथ ही लोगो को सरकार के नियमों का पालन करने की बात कही। रास्ते में निकलने वाले राहगीरों से पुलिसकर्मियों ने कहा कि अगर कोई जरूरी काम हो तो ही घर से बाहर निकलें अन्यथा घर पर रहें, अगर फालतू घर के बाहर घूमोगे तो कार्यवाही की जाएगी, सही समय पर दुकाने बन्द की जाए और घर से बाहर निकलने पर मास्क का उपयोग करें।

ब्लैक में राशन बेचने एवं 24 कालाबाजारियों पर कार्रवाही

मुरैना। गरीब का निवाला छीन कर राशन ब्लैक में बेचने वाले 24 कालाबाजारियों और मुनाफाखोरों को जिला प्रशासन और पुलिस ने बुधवार को 24 दूकानें सीलकर कार्रवाही की। गरीबों के लॉकडाउन में भुखमरी के शिकारों को उनके हक डाका डालने वाले सफेदपोश डकैतों पर कसा शिकंजा आज से पूरे मध्यप्रदेश में आवश्यक वस्तु एवं सेवायें अधिनियम - एस्मा - लागू कर दिया गया है।

पिछड़ी बस्तियों में बच्चों को बांटे खिलौने

अम्बाह। बचपन में शानदार खिलौने हर बच्चे का सपना होते हैं, खिलौने ही बच्चों का मूल्यवान धन होते हैं लेकिन कई माता- पिता अपने बच्चों का हर सपना पूरा नहीं कर पाते। वर्तमान में भी इस तरह के अनेक परिवार है, जिनके बच्चों के लिए खिलौना एक सपना है। अंचल में एक तरफ कोरोनावायरस के चलते घरो में रहकर परिवार के बड़े सदस्य तो विभिन्न कार्य करके अपना मनोरंजन कर लेते हैं, वहीं बच्चे घरों से बाहर न निकल पाने के कारण परेशान है। इन्हीं बच्चों का ध्यान रखते हुए पंडित छोटे लाल चतुर्वेदी शिक्षा प्रसार एवं पर्यावरण समिति के कल्लू शर्मा द्वारा पिछडी बस्तियों में बच्चो के लिये खाने की जगह खिलौनों का लंगर लगाया गया। खाने का लंगर तो सुना है लेकिन खिलौनों का लंगर नही सुना होगा, किन्तु पंडित छोटे लाल चतुर्वेदी शिक्षा प्रसार समिति द्वारा नगर की पिछड़ी बस्तियों में जाकर जरूरतमंद बच्चों के लिए निःशुल्क खिलौना उपलब्ध कराएं एकत्रित करके रखे गए। खिलौनों में से बच्चों ने अपने मनपसंद खिलौने छाटकर लिये। उक्त खिलौनों पाकर बच्चों का मन प्रसन्न हो गया और उन्होंने खिलौने लेकर खेलना शुरू कर दिया।

बीबी कौलां जी भलाई केंद्र ट्रस्ट गरीब तथा जरूरतमंद के लिए बना मसीहा

लॉकडाऊन के कारण लोग घरों में रहने के लिए मजबूर साहिल मेहता नॉर्थ इंचार्ज

पंजाब / बीसवीं सदी की सबसे भयानक और नामुराद बीमारी कोरोना जिसके बचाव के लिए सरकार ने लॉकडाऊन किया हुआ है। इस लॉकडाऊन के कारण रोजमर्रा के जीवन में दिहाड़ी लगा कर घर का चुल्हा चौंका चलाने वाले अब रोटी के लिए भी तरस रहे हैं। बीबी कौंला जी भलाई ट्रस्ट केंद्र के सेवादार इन बेसहारा, बेरोजगार लोगों के घर घर जाकर राशन बाँटने की सेवा निभा रहे हैं। हल्का दखनी के गुरू अर्जन देव नगर तथा ओर अन्य ईलाकों में ट्रस्ट ने राशन की तीसरी खेप 5 हजार घरों तक चावल, चीनी, पत्ती, हल्दी, मिर्च, जीरा, नियूटरी राशन की रसदें बाँटी। इस खेप से पहले 10 हजार घरों तक बीबी कौंला जी भलाई ट्रस्ट केंद्र राशन मुहईया करवाने में सफल रहा है। यहां वर्णनीय योग्य है कि बीबी कौंला जी भलाई ट्रस्ट केंद्र पहले से ही गरीबों तथाविधवा औरतों को प्रत्येक महीने राशन बाँटते आ रहा है, इसके साथ ही बीबी कौंला जी हस्पताल अब मरीजों के घर तक दवाएं पहुंचा रहा है, भाई गुरु इकबाल सिंह जी ने सरकार की हिदायतों के अनुसार आम जनता को सोशल डिस्टेंस बना कर अपने घरों में रहने की अपील की है। इस अवसर पर भूपिंदर सिंह राजू, मधुपाल सिंह गोगा के इलावा सेवादार आदि मौजूद थे।

जरूरतमंद सौ परिवारों को वितरित की खाद्यान्न सामग्री

अम्बाह। देश में इन दिनों कोरोनावायरस ने कहर बरपा रखा है जिसके चलते मजदूर और गरीब वर्ग के सामने रोजी-रोटी का संकट खड़ा हो गया है और उसके लिए दो वक्त का भोजन जुटाना भी मुश्किल हो गया है। ऐसे समय में देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा के आव्हान पर भारतीय जनता युवा मोर्चा अंबाह के अध्यक्ष गोलू भदौरिया और उनकी टीम ने नगर के दो सैकडा जरूरतमंद परिवारों को सूखी निःशुल्क खाद्य सामग्री आलू, आटा, चावल, शक्कर, मिर्च, मसाला, दाल इत्यादि राशन सामग्री के पैकेट वितरित किये, राशन वितरण का यह कार्यक्रम लगातार दो दिन से जारी है, जिसके तहत खेम सिंह भदोरिया, सुरेंद्र सिंह तोमर, बबलू तोमर, गोलू भदोरिया, छोटा त्यागी, मोहसिन अली, मुकेश कटारे, रितेश शर्मा, योगानंद शर्मा सहित अन्य लोगों ने जरूरतमंद परिवारों को चिन्हित कर खाद्य सामग्री वितरित की। गोलू भदोरिया ने बताया कि यह अभियान लगातार जारी रहेगा, जिससे कोई जरूरतमंद व्यक्ति भूखा ना रह सके।

आदिवासी परिवारों को राशन सामग्री उपलब्ध कराई गई

मुरैना। कोरोना वायरस से देश में फैल रही महामारी के चलते इस समय केंद्र सरकार द्वारा पूरे देश में लॉक डाउन लागू किया गया है। इस कारण लोगों को कठिनाई के दौर से गुजरना पढ़ रहा है। मगर समाजसेवियों द्वारा कमजोर वर्ग की सेवा करने में कहीं कोई कसर नहीं थोड़ी जा रही है। इसी कड़ी में करह आश्रम क्षेत्र में निवासरत शहरीया आदिवासी समुदाय के परिवारो के लोगों को साक्षी फूड प्रोडक्ट धनेला के संचालक कौशल गोयल एवं सजल अग्रवाल जीवाजी गंज मुरैना द्वारा सहयोग के रूप में शहरिया आदिवासी परिवारों को आटा, चावल, दाल, आलू, सरसों का तेल, शक्कर, नमक के पैकेट हल्दी मिर्ची एवं साबुन आदि के पैकेट बनाकर वितरण किया गया। इस अवसर व्यापार मंडल के अध्यक्ष विपिन गोयल एवं पटवारी उदय भान सिंह तोमर जिला प्रशासन के प्रतिनिधि के रूप में साथ रहे और लोगों को आश्वासन दिया कि जिला प्रशासन हर संभव मदद के लिए आपके साथ खड़ा है, किसी भी प्रकार की समस्या का सामना आप लोगों को नहीं करना पड़ेगा।

विद्युत विभाग के कर्मचारियों की सेवा सराहनीय

अम्बाह। विद्युत विभाग अम्बाह के कर्मचारी कोरोना जैसी भंयकर बीमारी में भी अपनी जान को खतरे में डालते हुए राज्य सरकार के आदेशों का पालन करते हुए विद्युत आपूर्ति को सुचारू बनाए रखने के लिए कडी मेहनत कर रहे हैं। विद्युत कंपनी के जेई उमाशंकर मित्तल, जग मोहन, भूपेंद्र शुक्ला, मनीष शर्मा, शैलेश, बंटी, प्रदीप राठौर, सूर्यवंशी, अरविंद शर्मा, रामबाबू सहित अन्य कर्मचारी दिन रात कार्य कर रहे हैं। ज्ञात रहे कि वर्तमान में कोरोना वायरस के कहर से सभी लोग अपने-अपने घरों में कैद हैं, उस दौरान हमें बाहरी दुनिया से मोबाइल, टीवी, रेडियो जैसे उपकरण जोडे हुए हैं, जिनके माध्यम से हमें देश-विदेश की खबरें प्राप्त होती हैं, साथ ही यह लोगों के समय काटने का हिस्सा भी है। इसी तरह एसी, टीवी ,फ्रिज का आनंद भी सभी लोग ले रहे हैं किंतु यह सभी आंनद तभी संभव होते है जब हमें विद्युत की लगातार आपूर्ति मिल सके, बिना विद्युत सप्लाई के यह उपकरण बेकार है, वर्तमान में जब सारी दुनिया वर्क फ्रॉम होम के कॉन्सेप्ट पर कार्य कर रही है, तब अंबाह विद्युत वितरण कंपनी के कर्मचारी अपनी जान जोखिम में डालकर विद्युत की लगातार आपूर्ति के लिए कार्य मे लगे हुए हैं विद्युत विभाग अंबाह का स्टाफ वर्तमान में उपभोक्ताओं की शिकायत पर तुरंत कार्य कर रहा है, जिससे अस्पताल सहित जरूरी विभागों को विद्युत उपलब्ध हो रही है और लोगों को विद्युत संबंधी सुविधाओ के साथ-साथ दूरदर्शन पर रामायण महाभारत जैसे मनपसंद सीरियल देखने को मिल रहे हैं। ज्ञात रहे कि वर्तमान में लगभग एक सैकड़ा कर्मचारी विद्युत आपूर्ति को सुचारू बनाए रखने के लिए दिन-रात शहरी ग्रामीण अंचल सहित पॉवर स्टेशनों पर मेहनत कर रहे हैं।

आवश्यकता है
पुष्पांजली राष्ट्रीय मासिक पत्रिका/ऑनलाइन न्यूज पोर्टल
को भारत के हर राज्य, जिला एवं तहसील स्तर पर ब्यूरो चीफ, रिपोर्टर और विज्ञापन प्रतिनिधियों की आवश्यकता है।
इच्छुक एवं अनुभवी व्यक्ति संपर्क करें।
देश के सभी प्रदेशों मे, मध्य प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, छत्तीसगढ, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, पंजाब, उड़ीसा, महाराष्ट्र, उत्तराखंड, जम्मू कश्मीर, बिहार, गुजरात, गोवा, झारखंड
कार्यालय: ए-ब्लॉक 404 भाऊ साहब की पोतनिस, इन्क्लेव गुरार रोड गोले का मंदिर ग्वालियर
संपर्क: 7999246560, 8269307478
Email-pushpanjalitoday@gmail.com. Web-www.pushpanjalitoday.com

अब घर-घर पहुंचेगा उचित मूल्य पर राशन

ग्वालियर। कोरोना महामारी के चलते लॉक डाउन के कारण बाजार बंद है। आम नागरिकों के लिए नगर निगम ग्वालियर द्वारा चलित बाजार सेवा प्रारंभ की गई है जिसके माध्यम से अब लोगों को घर घर जाकर उचित मूल्य पर राशन की आवश्यक वस्तुएं उपलब्ध कराई जाएंगी। इसका शुभारंभ आज कलेक्टर श्री कौशलेंद्र विक्रम सिंह, पुलिस अधीक्षक श्री नवनीत भसीन एवं नगर निगम आयुक्त श्री संदीप माकिन ने चलित बाजार के वाहनों को रवाना कर किया। इस अवसर पर अपर कलेक्टर श्री अनूप कुमार सिंह, अपर पुलिस अधीक्षक श्री पंकज पांडे सहित नगर निगम के अधिकारी उपस्थित रहे।

ज्ञात हो कि देशभर में कोरोना संक्रमण के चलते लॉक डाउन की घोषणा की गई है तथा सभी बाजार बंद है और लोगों से घरों में ही रहने की अपील की जा रही है। इसी के चलते राशन के लिए परेशान हो रहे नागरिकों की सुविधा के लिए नगर निगम ग्वालियर द्वारा जिला प्रशासन के सहयोग से चलित बाजार चलाने का निर्णय लिया गया है जिनके माध्यम से बस्तियों में व क्षेत्रों में लोगों को वाहन के माध्यम से घर-घर जाकर राशन का सामान उपलब्ध कराया जाएगा, वह भी उचित मूल्य पर। इसके लिए नगर निगम ग्वालियर द्वारा वाहन शुरू कर दिए गए हैं दो वाहनों को आज कलेक्टर एवं अन्य अधिकारियों ने चार शहर का नाका से रवाना किया तथा इस दौरान अनेक लोगों ने उक्त वाहनों से सामान खरीदा। जिसे स्वयं कलेक्टर पुलिस अधीक्षक एवं निगम आयुक्त ने अपने हाथों से दिया। यह वाहन गली गली में घूम कर घर-घर में जाकर लोगों को 130 रूपए में 5 किलो आटा, 60 रूपए में 2 किलो चावल, 100 रूपए में 1 किलो तुवर दाल, 100 रूपए में 1 लीटर सरसों का तेल, 20 रूपए में 1 किलो नमक की थैली एवं 90 रूपए में आवश्यक हल्दी धनिया मिर्च एवं जीरा के मसाले सौ सौ ग्राम उपलब्ध कराए जाएंगे। इस सामग्री की एक किट तैयार की गई है जो कि लोगों को 500 रूपए में उपलब्ध कराई जाएगी। शीघ्र ही निगम द्वारा और भी वाहन प्रारंभ किए जाएंगे जो शहर के विभिन्न स्थानों पर जाकर लोगों को राशन उपलब्ध कराएंगे। इसके लिए दाल बाजार के व्यापारियों ने भी जिला प्रशासन व नगर निगम को आश्वासन दिया है कि थोक मूल्य पर प्रशासन को खाद्य सामग्री उपलब्ध कराएंगे।

कलेक्टर, पुलिस अधीक्षक एवं निगम आयुक्त ने किया चलित बाजार का शुभारंभ

ड्यूटी पर लगे पुलिस कर्मचारियों के लिए प्रारंभ की चलित चाय बिस्किट वेन

इस दौरान पुलिस प्रशासन द्वारा शहर भर में ड्यूटी कर रहे पुलिस के कर्मचारियों व नगर रक्षा समिति के लोगों को चाय की सुविधा उपलब्ध कराने के लिए एक चलित वेन का शुभारंभ भी किया गया। यह वेन पुलिस कर्मचारियों को चाय एवं बिस्किट उपलब्ध कराएगी। इस प्रकार की तीन वैन शहर भर में चलाई जाएंगी। जिसका शुभारंभ आज अधिकारियों द्वारा किया गया।

सर्व ग्वालियर एप के माध्यम से एक हजार 365 परिवारों के पास पहुँचीं जरूरत की चीजें

ग्वालियर। नोवेल कोरोना वायरस (कोविड-19) के संक्रमण को रोकने हेतु जिला प्रशासन द्वारा लॉकडाउन के दौरान नागरिकों को रोजमर्रा की वस्तुएं क्रय करने में परेशानी न आए, इसके लिये जिला प्रशासन ने सर्व ग्वालियर एप के माध्यम से लोगों को होम डिलवेरी कर जरूरत की वस्तुएं उपलब्ध कराई जा रही हैं। जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री शिवम वर्मा ने बताया कि सर्व ग्वालियर एप के माध्यम से कुल एक हजार 555 उपभोक्ताओं द्वारा सब्जी एवं राशन के लिये ऑर्डर बुक कराए गए। जिसमें से एक हजार 300 65 ऑर्डरों पर होम डिलेवरी के माध्यम से सामग्री उपलब्ध कराई गई है। जबकि शेष डिमांडों पर उपभोक्ताओं को सामग्री भेजने की प्रक्रिया जारी है। सर्व ग्वालियर एप के माध्यम से जिला प्रशासन द्वारा उपभोक्ताओं को घर पर सामग्री पहुँचाने की जो सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है, इस सुविधा के लिये जिला प्रशासन की इस पहल को लोगों ने सराहनीय कदम बताया है। कोरोना वायरस के प्रकोप को देखते हुए जहां सब्जी एवं फल मंडी बंद होने के कारण सब्जी एवं फल उत्पादकों को दिक्कतों का सामना न करना पड़े। ऐसे में सर्व ग्वालियर एप की टीमें किसानों का सहयोगी बनकर उनके खेतों से सब्जी एवं फल निर्धारित दरों पर खरीदकर लोगों के घरों तक पहुँचा रहे हैं। जिससे किसानों को भी उनके उत्पाद का वाजिब दाम मिल रहा है। नागरिकों को शुद्ध एवं ताजी सब्जी तथा फल भी उचित मूल्य पर मिल रहे हैं। किसानों को सर्व ग्वालियर एप की सेवाओं से जोड़ा गया है।

प्रत्येक व्यक्ति को घर से बाहर निकलने पर पहनना होगा मॉस्क

ग्वालियर। राज्य शासन ने प्रदेश में प्रत्येक व्यक्ति के लिये घर से बाहर सार्वजनिक स्थलों पर निकलते समय मॉस्क/फेस कवर पहनना अनिवार्य किया है। सचिव, लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण ने आदेश जारी कर कहा है कि बिना मॉस्क/फेस कवर के सार्वजनिक स्थल पर जाना एपिडेमिक एक्ट का उल्लंघन माना जायेगा तथा संबंधित के विरुद्ध विधिक कार्यवाही की जायेगी। लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग ने कहा है कि बाजार में मिलने वाले ट्रिपल लेयर मॉस्क अथवा होम मेड तीन परतों वाला फेस कवर उपयोग में लाया जा सकता है। होम मेड मॉस्क/फेस कवर को साबुन से धोकर पुनः प्रयोग किया जा सकता है। मॉस्क/फेस कवर उपलब्ध न होने की स्थिति में गमछा/रुमाल/दुपट्टा इत्यादि को भी फेस कवर के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। कभी भी उपयोग में लाया हुआ फेस कवर अथवा मुँह-नाक ढंकने में प्रयुक्त गमछा आदि का पुनः प्रयोग उसे साबुन से अच्छी तरह साफ किये बिना नहीं किया जाये।

संक्रमण की चिंता छोड़ पुलिस कर्मी निभा रहे हैं अपना दायित्व

ग्वालियर। जब हम अपने त्यौहारों का आनंद ले रहे होते हैं तब पुलिस के जवान अपने परिवार को छोड़ हमारी सुरक्षा में रात-दिन अपने दायित्वों का निर्वहन करते हैं। त्यौहार हो या कड़ाके की सर्दी या भीषण गर्मी। पुलिस के जवान हमेशा अपने कर्तव्य स्थल पर रहकर हमारी सुरक्षा की जिम्मेदारी निभाते हैं। पुलिस के जवानों को जितना सम्मान हमें देना चाहिए, शायद हम उतना नहीं देते हैं। कोरोना जैसे भयानक संक्रमण की स्थिति में भी 24 घंटे अपने कर्तव्य पर रहकर अपने दायित्वों का निर्वहन करने वाले पुलिस विभाग के अधिकारियों और कर्मचारियों का ग्वालियर के हजीरा चौराहे पर पुष्प मालाओं से स्वागत कर उनकी हौसला अफजाई की गई। जन कल्याण संघर्ष समिति के कार्यकर्ताओं ने पुलिस के अधिकारियों और जवानों को फूलमाला पहनाई। इसके साथ ही उनके द्वारा नोवेल कोरोना संक्रमण की स्थिति में भी रात-दिन कार्य कर लोगों की सुरक्षा और उनकी व्यवस्थाओं के लिये जो कार्य किया जा रहा है, उसकी प्रशंसा करते हुए स्वागत किया। संघर्ष समिति के सर्वश्री रामअवतार सिंह वैश्य, डॉ.

सुरेन्द्र यादव, विजय भवानी, राहुल पटेल, प्रदीप राजावत, विक्रम पटेल, जैकी सक्सेना तथा लाखन रत्नाकर ने पुलिस विभाग के लोगों का स्वागत किया। पुलिस विभाग द्वारा नोवेल कोरोना वायरस के संक्रमण को रोकने के लिये जहां जिले की सीमाओं को सील करने के बाद आने-जाने वालों की जांच की व्यवस्था का जिम्मा उठा रखा है वहीं शहर में आम जनों को इस संक्रमण से बचने के लिये घरों में रहने की हिदायत निरंतर शहर में भ्रमण कर दी जा रही है। आम जनों को मूलभूत सुविधायें उपलब्ध हों, इसके लिये भी पुलिस रात-दिन कार्य कर रही है। लोगों की सुरक्षा के लिये लागू किए गए प्रतिबंधात्मक आदेशों का पालन कराना भी पुलिस के दायित्वों का एक हिस्सा है, जिसे सभी जवान बखूबी अंजाम दे रहे हैं। जिले के पुलिस कप्तान श्री नवनीत भसीन के नेतृत्व में पुलिस का पूरा अमला ग्वालियर जिले के चप्पे-चप्पे का भ्रमण कर अपने दायित्वों का बखूबी निर्वहन कर रहा है। पूरा शहर पुलिस के ऐसे जाबाजों के हौसले को प्रणाम कर रहा है वहीं उनका स्वागत कर हौसला अफजाई भी कर रहा है।

नागरिक भी कर रहे हैं उनका स्वागत

कोविड-19 संबंधी जानकारी का बिना स्वीकृति प्रचार-प्रसार करना दण्डनीय घोषित

ग्वालियर। राज्य शासन ने मध्यप्रदेश एपिडेमिक डिसीजेस (कोविड-19) विनियम-2020 के अंतर्गत कोविड-19 के संबंध में स्वास्थ्य विभाग अथवा जिला दण्डाधिकारी की स्वीकृति के बिना किसी जानकारी के प्रचार-प्रसार को दण्डनीय अपराध घोषित किया है। सचिव, लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण श्री राजीव चन्द्र दुबे ने आज इस आशय का आदेश जारी किये हैं। लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग द्वारा जारी आदेश के अनुसार कोई भी व्यक्ति/संस्था/संगठन को कोविड-19 के संबंध में तथ्यों की जाँच और यथा-स्थिति की जानकारी के प्रचार-प्रसार के लिये प्रमुख सचिव, लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण/आयुक्त, स्वास्थ्य सेवाएँ/आयुक्त, चिकित्सा शिक्षा/संचालक, स्वास्थ्य सेवाएँ/संचालक चिकित्सा शिक्षा अथवा जिला दण्डाधिकारी की पूर्व स्वीकृति प्राप्त करनी होगी। पूर्व स्वीकृति के बिना किसी प्रिंट अथवा इलेक्ट्रॉनिक अथवा सामाजिक माध्यम (सोशल मीडिया) द्वारा ऐसी जानकारी का उपयोग नहीं किया जा सकेगा। यदि कोई व्यक्ति/संस्था/संगठन बिना पूर्व स्वीकृति के ऐसी गतिविधि में लिप्त पाया जायेगा, तो उसे विनियमों के अधीन दण्डनीय अपराध कायम कर उसके विरुद्ध विधिक कार्यवाही की जायेगी।

ग्वालियर नगर में पिछले 10 वर्षों बंद पड़े विद्युत शवगृह को किया गया प्रारंभ

ग्वालियर। ग्वालियर में लक्ष्मीगंज मुक्तिधाम में निर्मित विद्युत शवगृह पिछले 10 सालों से बंद था। नगर निगम द्वारा इसे पुनः प्रारंभ करने की कार्रवाई पूर्ण कर ली गई है। विद्युत शवगृह का शुक्रवार को कलेक्टर श्री कौशलेन्द्र विक्रम सिंह ने पुलिस अधीक्षक श्री नवनीत भसीन एवं नगर निगम आयुक्त श्री संदीप माकिन के साथ अवलोकन किया तथा आवश्यक दिशा-निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिए। कलेक्टर कौशलेन्द्र विक्रम सिंह ने कहा कि निगम द्वारा विद्युत शवगृह प्रारंभ किया गया है। विद्युत शवगृह में जो आवश्यक व्यवस्थायें तथा साफ-सफाई और रंग-रोगन करना है, उसे भी तत्परता से किया जाए। नगर निगम के कार्यपालन यंत्री विद्युत श्री देवीसिंह राठौर ने बताया कि विद्युत शवगृह 24 घंटे चालू रहेगा तथा इसमें लगे ब्लोवर के माध्यम से न तो बदबू फैलती है और न ही संक्रमण का खतरा रहता है। लगभग 40 मिनट में अंतिम संस्कार की प्रक्रिया पूर्ण हो जाती है।

स्वात्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक, एवं संपादक-भरत सिंह चौहान। पुष्पांजली प्रिंटर्स-गोवर्धन कॉलोनी, भिण्ड रोड, गोला का मंदिर, जिला ग्वालियर (म.प्र.) से मुद्रित एवं दीपू इलेक्ट्रोनिक्स, पंजीयन क्रमांक/ एम.पी.एच.आई.एन. /31130 नियर हनुमान मंदिर, गोवर्धन कॉलोनी, भिण्ड रोड, गोला का मंदिर, ग्वालियर (म.प्र.) से प्रकाशित। सम्पादक - भरत सिंह चौहान E-mail : pushpanjalitoday17@gmail.com 0751-4901333, M.: 8269307478